नव भारत
| संस्थापक : स्व. रामगोपाल माहेश्वरी | प्रेरणा स्त्रोत : स्व. प्रफुल्ल माहेश्वरी |

पहाड़ों की पुकार और हमारी जिम्मेदारी

जम्मू-कश्मीर में माता वैष्णो देवी मंदिर की यात्रा पर निकले श्रद्धालुओं के लिए हाल ही में आई भूस्खलन की घटना ने पूरे देश को झकझोर दिया है. भारी बारिश से हुए इस हादसे में कई तीर्थयात्रियों की मौत हो गई और कई लोग घायल हुए. बचाव दल ने तुरंत मोर्चा संभाला, लेकिन प्रकृति के इस क्रोध ने एक बार फिर हमें यह सोचने पर मजबूर कर दिया कि क्या हम हिमालयी क्षेत्रों में विकास और सुरक्षा के बीच संतुलन साध पा रहे हैं ?

दरअसल, जम्मू-कश्मीर, हिमाचल प्रदेश और उत्तराखंड जैसे पहाड़ी राज्य आज तीव्र विकास और बढ़ती आबादी का दबाव झेल रहे हैं. सड़क, सुरंग, होटल, हाइड्रो प्रोजेक्ट और धार्मिक पर्यटन की सुविधाओं ने पहाड़ों को लगातार खोखला किया है. परिणामस्वरूप जरा-सी बारिश या भूकंपीय हलचल बड़े हादसों का कारण बन जाती है. वैष्णो देवी के मार्ग पर हुआ भूस्खलन अपवाद नहीं, बल्कि उस संकट का हिस्सा है जो लंबे समय से चेतावनी देता आ रहा है. हिमालयी क्षेत्र भूगर्भीय दृष्टि से बहुत युवा और नाजुक माने जाते हैं. यहां पर प्राकृतिक संतुलन जरा-सा बिगड़ते ही आपदा का रूप ले लेता है. बारिश से पहाड़ों का कटाव बढ़ता है और अनियंत्रित निर्माण कार्य इसे और भयावह बना देता है. वैज्ञानिक बार-बार चेतावनी देते रहे हैं कि पर्वतीय इलाकों में निर्माण कार्य सीमित और संतुलित होना चाहिए, लेकिन दुर्भाग्यवश, विकास की अंधी दौड़ में हम इन चेतावनियों को नज़र अंदाज़ कर रहे हैं. वैष्णो देवी, केदारनाथ, बद्रीनाथ, अमरनाथ जैसे तीर्थस्थल हर साल लाखों लोगों को आकर्षित करते हैं. इतने बड़े पैमाने पर यात्रियों के आगमन के लिए बुनियादी ढांचे की जरूरत तो है, लेकिन यह आवश्यकता पहाड़ों की सहनशक्ति से अधिक नहीं होनी चाहिए. अधिक सड़क चौड़ीकरण, होटल निर्माण और सीमेंट-कंक्रीट पर आधारित ढांचों से पहाड़ों की प्राकृतिक संरचना को नुकसान पहुंच रहा है.

अब समय आ गया है कि केंद्र और राज्य सरकारें मिलकर एक विशेषज्ञ समिति का गठन करें. यह समिति भूगर्भशास्त्रियों, पर्यावरणविदों, इंजीनियरों और आपदा प्रबंधन विशेषज्ञों से मिलकर बने. इसका मुख्य काम होगा,पर्वतीय इलाकों में चल रहे निर्माण कार्यों की निगरानी, तीर्थ और पर्यटन मार्गों के लिए वैज्ञानिक दृष्टि से सुरक्षित बुनियादी ढांचे का सुझाव देना, आपदा जोखिम मूल्यांकन और समय-समय पर सुरक्षा ऑडिट करना, स्थानीय समुदायों को आपदा प्रबंधन और पर्यावरण संरक्षण में सक्रिय भागीदारी के लिए प्रेरित करना. दरअसल, हमारी नीतियों में यह साफ होना चाहिए कि विकास का अर्थ केवल सड़कें, होटल और बिजलीघर खड़ा करना नहीं है. असली विकास वही है जो प्रकृति और समाज दोनों के अनुकूल हो. यदि हम पहाड़ों को असुरक्षित बना देंगे तो वहां का पर्यटन और धार्मिक आस्था दोनों ही खतरे में पड़ जाएंगे. कुल मिलाकर वैष्णो देवी हादसा केवल एक दुखद घटना नहीं, बल्कि एक सख्त चेतावनी है.

हमें यह समझना होगा कि पहाड़ों के विनाश की कीमत पर विकास नहीं हो सकता. यदि हम समय रहते नहीं चेते तो आने वाली पीढ़ियां हमें माफ नहीं करेंगी. इसलिए अब जरूरी है कि हिमालयी राज्यों की सुरक्षा और पर्यावरण संरक्षण को सर्वोच्च प्राथमिकता दी जाए. विशेषज्ञ समिति का गठन इस दिशा में पहला कदम हो सकता है. हमारे पहाड़ ईश्वरीय वरदान हैं.जाहिर है प्रकृति और श्रद्धा, दोनों का सम्मान करना ही हमारे लिए सच्चा धर्म और दायित्व है.

राष्ट्रीय खेल दिवस पर विशेष

मेजर ध्यानचंद खेल भावना के प्रतीक

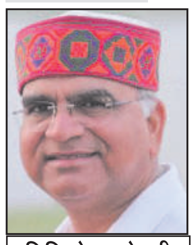

निखिलेश महेश्वरी

29 अगस्त 2025 को हॉकी के जादूगर मेजर ध्यानचंद की 120वीं जयंती है. उनका नाम आते ही हॉकी के मैदान में गेंद और स्टिक का अद्भुत संगम, दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर देने वाला खेल-कौशल, और खेल के प्रति उनका अतुलनीय समर्पण स्मरण हो आता है. उनके अमूल्य योगदान के सम्मान में देश प्रत्येक वर्ष 29 अगस्त को राष्ट्रीय खेल दिवस के रूप में मनाता है. एक ऐसा दिन, जब खेल केवल प्रतियोगिता का माध्यम नहीं, बल्कि राष्ट्रप्रेम, अनुशासन और उत्कृष्टता का प्रतीक बन जाता है . खेलों का जीवन में महत्व अनुराग पुरोहित की इन पंक्तियों से सहज समझा जा सकता है—

जीवन का हिस्सा बना खेल, जीवन में लाता है प्रकाश
यह तनाव को करता दूर, रोगों का करता है नाश .
इससे आती है तंदुरुस्ती, और होता है बुद्धि विकास;
खेल खेलने से तन थकता, मन न थकता है बार-बार

भारत के इतिहास पर दृष्टि डालें तो स्पष्ट होता है कि प्रत्येक महापुरुष के जीवन में किसी न किसी खेल का विशेष स्थान रहा है. श्रीकृष्ण की गेंद-खेल और कालिया नाग दमन की ड़ा, भीम का गदा-युद्ध में अप्रतिम कौशल, अर्जुन का धनुष-बाण संचालन अथवा छत्रपति शिवाजी महाराज की सीमोल्लंघन की वीरतापूर्ण खेल-कूद की गतिविधियाँ, ये सभी केवल मनोरंजन के साधन नहीं थे, बल्कि उनके व्यक्तित्व-निर्माण की सुदृढ़ आधारशिला थे . निस्संदेह, इस देश की पावन मिट्टी में खेल-खेल में ही भगवान और वीर जन्म लेते रहे हैं . स्वामी विवेकानंद ने भी जब एक दुर्बल युवक को गीता पढ़ने की इच्छा व्यक्त करते सुना, तो पहले उसे गीता पढ़ने के बजाय फुटबॉल खेलने की सलाह दी उनका संकेत स्पष्ट था, मजबूत शरीर और स्फूर्त मन ही ज्ञान को आत्मसात कर सकता है .

हमारे पारंपरिक भारतीय खेल केवल शारीरिक स्वास्थ्य का साधन नहीं, बल्कि वे मनुष्य के भीतर साहस, संगठन, धैर्य, बलिदान और जीवन-दर्शन जैसे गुणों का विकास करते हैं. उदाहरण के लिए, कबड्डी में आउट होकर फिर इन होना मानो मृत्यु के बाद नए जीवन का संदेश देता है . निस्संदेह, देशज खेलों में गूढ़ शिक्षा छिपी है, जो खेलते-खेलते सहज ही मन में उतर जाती है.

राष्ट्रीय खेल दिवस के अवसर पर हमें अपने देश के पारंपरिक खेलों को स्मरण करते हुए भावी पीढ़ी को उनसे परिचित कराना चाहिए, साथ ही उन्हें आधुनिक खेलों में भी दक्ष बनाना चाहिए, क्योंकि खेल केवल शारीरिक स्फूर्ति का साधन नहीं, बल्कि चरित्र और संस्कारों के संवाहक भी हैं. यह खेल दिवस महान खिलाड़ी मेजर ध्यानचंद के स्मरण का अवसर है, जिनके अद्वितीय खेल कौशल और योगदान के सम्मान में राष्ट्रीय खेल दिवस घोषित किया गया . उनकी जयंती पर विद्यार्थियों और खिलाड़ियों के बीच श्रद्धासुमन अर्पित करते हुए हमें उनके जीवन और आदर्शों से प्रेरणा लेकर संकल्प करना चाहिए कि हम खेल जगत में न केवल उत्कृष्टता, बल्कि शुचिता और राष्ट्रभक्ति का भी परचम लहराएँगे.

मेजर ध्यानचंद का जन्म 29 अगस्त 1905 को प्रयागराज में हुआ. बचपन में उनमें खिलाड़ी जैसे कोई विशेष लक्षण नहीं थे, पर सतत साधना, अभ्यास, लगन और संकल्प से उन्होंने हॉकी में महारथ प्राप्त की, जो उन्हें विश्वविख्यात बना गई . छठी कक्षा तक पढ़ाई के पश्चात 1922 में वे मात्र 16 वर्ष की आयु में प्रथम ब्राह्मण रेजिमेंट, दिल्ली में सिपाही के रूप में भर्ती हुए . उनका असली नाम ध्यान सिंह था, लेकिन चांदनी रात में अभ्यास करने की आदत के कारण साथी उन्हें चंद कहने लगे और यही आगे चलकर उनका उपनाम बन गया—ध्यानचंद .

1928, 1932 और 1936 के ओलंपिक में भारत को लगातार तीन स्वर्ण पदक दिलाने में उनका योगदान निर्णायक रहा. 1936 के बर्लिन ओलंपिक फाइनल में भारत ने जर्मनी को 8-1 से हराया, जिसमें ध्यानचंद ने तीन गोल किए. जर्मन तानाशाह हिटलर भी उनके खेल-कौशल से इतना प्रभावित हुआ कि उन्हें अपनी सेना में उच्च पद का प्रस्ताव दिया, परंतु ध्यानचंद ने यह कहकर ठुकरा दिया—मैंने भारत का नमक खाया है, देश से गद्दारी नहीं करूंगा . अपने करियर में उन्होंने 1000 से अधिक गोल किए और 'हॉकी का जादूगर' तथा The Magician के रूप में विश्वविख्यात हुए . 1956 में उन्हें पद्मभूषण से सम्मानित किया गया . 3 दिसंबर 1979 को वे इस दुनिया से सदा-सदा विदा हो गए, लेकिन उनकी स्मृति आज भी भारतीयों के हृदय में जीवित है .

हार हुई तो मत घबराना, विजय मिली तो मत इतराना,
वृत्ति खिलाड़ी भूल न जाना, आज रुके तो कल बढ़ जाना,

विजय-पराजय जो भी आएं, निर्भय होकर खेल — खेल खिलाड़ी खेल, खेल खिलाड़ी खेल .

(लेखक विद्या भारती मध्य भारत प्रांत के प्रांत संगठन मंत्री हैं)

महाकौशल की डायरी

रडार पर रहेंगे ज्यादा विरोध वाले नवनियुक्त जिलाध्यक्ष ...?

अविनाश दीक्षित

संगठन को मजबूती देने के लिहाज से कांग्रेस में संगठन सृजन अभियान चलाया गया. महाकौशल के साथ ही समूचे प्रदेश के अनेक जिलों में नए जिलाध्यक्ष बनाए गए और कुछ जिलों में पुराने जिला कांग्रेस अध्यक्षों को बरकरार रखा गया. इरादा तो कांग्रेस संगठन के सशक्तिकरण का रहा किंतु जैसे ही नवनियुक्त जिलाध्यक्षों की सूची सार्वजनिक हुई वैसे ही अनेक जिलों में विरोध के स्वर उठना शुरू हो गए जो अभी भी जारी हैं. महाकोशल के जबलपुर, बालाघाट, सिवनी, डिंडोरी सहित विंध्य के शहडोल, अनूपपुर जिलों में नए जिलाध्यक्षों के खिलाफ विभिन्न सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म में कटाक्ष और आरोपों के ऐसे तीर चले कि पार्टी के शीर्ष नेताओं को बयान जारी करना पड़ गया कि विरोध जता रहे कांग्रेसजन पार्टी फोरम में अपनी बात रखें, सोशल मीडिया का सहारा ना लें. इसके बाद सोशल मीडिया में विरोध का हो-हल्ला कुछ कम नजर आया, मगर विरोध स्वरूप मुंडन कराने, प्रदर्शन किए जाने से यह बात तो जाहिर हो ही गई कि जिस तथाकथित रायशुमारी का चोला पहनकर पार्टी नेताओं ने निर्णय लिए उसमें विश्वसनीयता, सर्वस्वीकार्यता की जगह मनमानी ज्यादा नजर आई.

फिलहाल कांग्रेस के गलियारों में चर्चा है कि मप्र में नियुक्त जिलाध्यक्षों को लेकर सबसे ज्यादा शिकायतें राहुल गांधी तक पहुंचीं हैं. जिन्होंने नाराजगी जाहिर करते हुए नियुक्तियों के लिए जिम्मेदार संगठन के नेताओं को निर्देश दिए हैं कि मध्यप्रदेश में जो गलती हो गई हैं वैसी गलती अन्य राज्यों में न हो और ना ही उनके पास कोई शिकायत पहुंचे. राहुल के इस रूख के बाद कयास लगाए जा रहे हैं कि नवनियुक्त जिलाध्यक्षों में से कई को हटाया जा सकता है. ऐसे में उन जिलाध्यक्षों की नींद उड़ गई है जिनका ज्यादा विरोध हो रहा है. लेकिन बड़ा सवाल यह है कि कांग्रेस का संगठन पहले से ही कमजोर रहा है और यदि नियुक्ति के बाद नवनियुक्त जिलाध्यक्ष को हटाया जाता है तो दूसरे अन्य नेता क्या विरोध नहीं जताएंगे और फिर इनको किस तरह संतुष्ट किया जाएगा.

एफआईआर तक पहुंचने लगी बात...

हर तालिका तीज के दिन कांग्रेस प्रदेश अध्यक्ष जीतू पटवारी के महिलाओं को लेकर दिए गए बयान का अनुसरण कर जबलपुर में सोशल मीडिया पर टिप्पणी करने का पहला मामला सामने आ गया है. जब कांग्रेस के पूर्व पार्षद शाबान मंसूरी ने बयान पर सहमति जताकर टिप्पणी की तो भाजपाईयों ने उनके खिलाफ घमापुर पुलिस थाना में एफआईआर दर्ज करा दी. सर्वविदित है कि 50 प्रतिशत आबादी महिलाओं की है. ऐसे में भविष्य में कांग्रेस के लिए प्रदेश अध्यक्ष का ऐसा बयान महिलाओं पर क्या असर डालेगा, इस पर तरह-तरह की चर्चाएं हो रही हैं लेकिन इसका परिणाम क्या होगा ये तो आने वाला समय ही बताएगा.

कांग्रेस के प्रदर्शन ने भाजपाईयों को चौंकाया....

जबलपुर में वीरांगना रानी दुर्गावती फ्लाई ओवर ब्रिज का कुछ माह पहले कांग्रेस ने जब सांकेतिक रूप से लोकार्पण किया था तो उस वक्त कांग्रेस के प्रदर्शन में पूर्व विधायक संजय यादव, जिला अध्यक्ष सौरभ नाटी शर्मा के अलावा कोई स्थानीय बड़ा कांग्रेस का चेहरा शामिल नहीं था . न तो इस दौरान पूर्व मंत्री लखन घनघोरिया , तरूण भनोत इस कार्यक्रम में शामिल हुए थे और न ही पूर्व विधायक विनय सक्सेना ...इसके बाद से जबलपुर में यह चर्चा होने लगी थी कि कांग्रेस नेताओं में एकजुटता के अभाव के साथ गुटबाजी हावी हो चुकी है. लेकिन हाल ही में वोट चोरी के खिलाफ कांग्रेस प्रदेश अध्यक्ष जीतू पटवारी के शहर में कदम रखने के बाद कांग्रेस ने जो एकजुटता के साथ शक्ति प्रदर्शन किया है उससे आमजनों के साथ ही भाजपाई भी चकित हो गए हैं. इस प्रदर्शन में पूर्व मंत्री, विधायक लखन घनघोरिया, पूर्व विधायक विनय सक्सेना के साथ सभी कांग्रेसियों की मौजूदगी रही. यहां तक तो बात ठीक ही थी लेकिन राजनैतिक गलियारों में यह सवाल पूछा जा रहा है कि आखिर कुछ ही समय में कांग्रेस के अंदर ऐसा क्या हो गया है जिससे गुटबाजी में उलझे जबलपुर के कांग्रेसी नेता एकजुट हो गए ? चर्चा है कि प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष को राहुल गांधी के द्वारा स्पष्ट निर्देश दिए गए हैं कि संगठन सृजन अभियान के तहत अब कांग्रेस में एकजुटता चरम पर लाई जाए और कहीं से भी यह जाहिर न हो कि पार्टी में एकजुटता का अभाव है. दूसरी ओर यही चर्चा की जा रही है कि कांग्रेस प्रदेश अध्यक्ष जीतू पटवारी के समक्ष स्थानीय कांग्रेस नेताओं ने शक्ति प्रदर्शन इसलिए किया क्योंकि वे अपना रिपोर्ट कार्ड दुरूस्त करवा सकें और 2028 में होने वाले विधानसभा चुनाव में उन्हें या उनके समर्थकों को उपकृत करा सकें.

अंतत : मिग-21 को अंतिम विदाई

पिछले 6 दशक से भी अधिक समय से भारतीय वायुसेना में उल्लेखनीय भूमिका निभाने वाले लड़ाकू विमान मिग-21 को अंतिम विदाई दे दी गई. 1964 में रूस निर्मित यह विमान भारतीय वायुसेना में शामिल किया गया. 1965 और 1971 के दोनों युद्धों में इस विमान ने अत्यंत उपयोगी भूमिका निभाई. बांग्लादेश युद्ध के समय इसी विमान से ढाका के गवर्नर की कोठी को निशाना बनाया गया था. इसके दूसरे दिन गवर्नर ने इस्तीफा दिया और पाकिस्तानी फौज ने आत्मसमर्पण किया था. 1999 के ऑपरेशन %सफेद सागर% में मिग-21 ने पाकिस्तान के मनसूबे विफल कर दिए थे. 2019 में भी अपने मिग-21 से अभिनंदन वर्धमान ने पाकिस्तान के एफ-16 विमान का मुकाबला किया था. इसके बावजूद अब लड़ाकू विमानों का तंत्रज्ञान बदल चुका है इसलिए पुराने मिग विमानों को हटाना आवश्यक हो गया. अगले महीने 26 सितंबर को औपचारिक रूप से इस विमान की आखिरी उड़ान होगी. दुनिया की कोई वायुसेना इतने पुराने विमान इस्तेमाल नहीं करती. मिग के बाद भारत ने रूस से सुखोई विमान खरीदे. बाद में फ्रांस से राफेल विमान हासिल किए गए. मिग-21 की जगह लेने के लिए अब तेजस विमान विकसित किया जा रहा है. इसमें दो राय नहीं कि मिग-21 आउटडेटेड और रिस्की विमान बन चुका था. फ्लाइट लेफ्टिनेंट अभिजीत गाडगिल की राजस्थान के सूरतगढ़ में मिग-21 विमान की दुर्घटना में 17 सितंबर 2021 को मृत्यु हुई थी. तब से 4 वर्षों में भारतीय वायुसेना के 340 विमान दुर्घटनाग्रस्त हो चुके हैं जिनमें 150 से अधिक होनहार युवा पायलटों ने जान गंवाई. पुराने विमानों को स्पेयर पार्ट लगाकर जैसे-तैसे उड़ाना खतरनाक है. ये आसमान में कब दगा दे जाएंगे, इसका भरोसा नहीं रहा इसलिए 60 वर्ष पुराने मिग-21 को सेवा से हटा देना ही उचित है.

दूसरी ओर यह भी जरूरी है कि भारतीय वायुसेना नए आधुनिक विमान खरीदकर अपनी स्क्वाड्रन बढ़ाए क्योंकि चीन और पाकिस्तान दोनों का खतरा मौजूद है. तेजस विमानों के निर्माण में भी तेजी लानी होगी.

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी

निशानेबाज

गणेशोत्सव में गूंजे पुकार युवा समझें सामाजिक सरोकार

पड़ोसी ने हमसे कहा, निशानेबाज, हमारा देश उमंग-उल्लास से भरा और उत्सवप्रिय है. घर-घर गणपति विराजे हैं. सार्वजनिक गणेश मंडलों की तादाद भी पहले से बढ़ी है. भक्ति भावना का सैलाब फूट पड़ा है. बैंड-बाजे और डीजे के शोर में नाचते-गाते युवा गणपति बाप्पा को स्थापना के लिए मंडप में लाए. धर्म में राजनीति भी पनपने लगी है. नेताओं के लिए कार्यकर्ताओं को जुटाने का यह अच्छा मौका है. स्थानीय निकाय चुनाव के लिए उनकी बड़ी तादाद में जरूरत पड़ेगी. इसलिए गणेशोत्सव मंडलों में काफी बड़ी रकम खर्च करते हुए कार्यकर्ताओं को खुश किया जा रहा है. उनका उत्साह बढ़ाया जा रहा है.

हमने कहा, गणेशोत्सव में भव्यता तो बढ़ रही है लेकिन महाराष्ट्र के कर्ज में डूबे किसानों की आत्महत्या अभी भी जारी रहना दुखद है. क्या गणेशोत्सव पर किए जाने वाले करोड़ों के खर्च का एक हिस्सा किसानों को राहत देने के लिए अलग नहीं

रखा जा सकता? सामाजिक कर्तव्य के नाते ऐसा करने में कोई हर्ज नहीं है? महाराष्ट्र में गणेशोत्सव प्रारंभ करने वाले लोकमान्य तिलक भी तो चाहते थे कि इस निमित्त संगठित होने वाले युवक राष्ट्र चेतना के साथ रचनात्मक सामाजिक कार्य करने में जुट जाएं.

पड़ोसी ने कहा, निशानेबाज, समाज में पहले भी गरीबी अमीरी का अंतर रहा है. पांचों उंगलियां कभी बराबर नहीं रहतीं. किसानों की समस्या दूर करने के लिए सरकार को ध्यान देना होगा. गणेशोत्सव की भव्यता, धूमधाम, बैंड-बाजा, नाच-गाने में कटौती क्यों की जाए? युवा शक्ति नेताओं के इशारे पर नाचेगी या समाजसेवा करेगी? उसे जिसमें शुभ-लाभ नजर आएगा वही करेगी. गणेशोत्सव के बौद्धिक, सांस्कृतिक कार्यक्रम कहां लुप्त हो गए? मोबाइल व लैपटॉप की आभासी दुनिया में डूबे युवाओं की दुनिया अलग है. ऐसे आत्मकेंद्रित युवाओं को सामाजिक सरोकार और गरीबों की मदद की प्रेरणा सिर्फ गणपति बाप्पा ही दे सकते हैं.

शब्द-सागर : डॉ. सागर खादीवाला

CROSS WORD 12006 - डॉ. सागर खादीवाला

1	2	3	4		■	5	6
7				■	8		
	■		■	9	■	10	
11	12		■	13	14	■	■
■		■	15			16	17
18				■	19		
20		■	21			■	
■	22			■	■	23	

बाएं से दाएं

1. वह जिसका काम सभी बाधाओं से नगर की रक्षा करना हो 5. समय का वह विभाग जो 24 सेकंड के बराबर होता है 7. बौना, छोटे कद का, हड़पना 8. भाई का पुत्र 10. किसी वस्तु को ले आना या सामने रखना 11. घी या तेल में पकाना या बघारना, जीर्ण होना 13. शत्रु, बैरी 15. पत्रकार का पेशा या व्यवसाय 18. कस्तूरी आदि का बना एक सुगंधित द्रव्य जो मूर्च्छित व्यक्ति को होश में लाता है 19. रक्त पीने वाला, राक्षस 20. जो खराब या निकृष्ट हो चुका हो 21. कोई शब्द या बात बार-बार कहना 22. कहकर मुकर जाना 23. देने का कार्य, खैरात

ऊपर से नीचे

1. नया-नया आया हुआ (सं.) 2. दुख, शोक, जाना 3. मंद-मंद शब्द होना (घुंघरू आदि का) 4. पवित्र, निष्कलंक (उर्दू) 5. तांबे या पीतल की बड़ी बटलोई 6. शरमाना 9. स्वभाव, जीवन में किए जाने वाले काम या आचरण 12. डगमगाना, झोंका खाकर नीचे आना 14. आवाज देना, चिल्लाकर बुलाना 15. पानी से धोना 16. खाली 17. वस्तु, शरीर आदि की वह गर्मी अथवा सर्दी की वह स्थिति जो कुछ विशेष प्रकार से नापी जाती है 18. गोंद

Solution 12005

नि	रा	भि	ष	■	ध	■	ऊ
ग	ल	न	■	अ	म	रू	द
रा	■	ट	क	ट	की	■	बि
नी	म	■	था	ल	■	खा	ला
■	हा	नि	■	■	मा	न	व
अ	प्र	का	शि	त	■	दा	■
क	ल	ह	■	ग	जा	न	न
रा	य	■	भि	ड़ा	ना	■	ट

ज्योतिषाचार्य प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म .प्र .)

आज जिनका जन्मदिन है

वर्ष के प्रारंभ में मित्रों से मतभेद होगा, यात्रा का योग है, व्यर्थ की चिन्ताओं से मन तनावग्रस्त रहेगा, सामाजिक विवाद से अत्याधिक क्रोध से हानि होगी, वर्ष के मध्य में पद प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी, अधिकारियों के सहयोग से कार्य बनेगा, पूर्व निर्धारित कार्यो में सफलता प्राप्त होगी.

मेष और वृश्चिक राशि के व्यक्तियों का मित्रों से मतभेद रहेगा, यात्रा का योग है, वृष और तुला राशि के व्यक्तियों का अधिकारियों से मन मुटाव रह सकता है, हानि का योग है, कर्क राशि के व्यक्तियों की चिन्ता दूर होगी, परेशानी से मुक्ति मिलेगी, सामाजिक विवाद का सामना करना पड़ सकता है, सिंह राशि के व्यक्तियों को मान प्रतिष्ठा मिलेगी, मिथुन और कन्या राशि के व्यक्तियों को कार्यो में सफलता प्राप्त होगी, मकर और कुंभ राशि के व्यक्तियों को कार्यक्षेत्र में वृद्धि होगी, पारिवारिक सुख बना रहेगा, धनु और मीन राशि के व्यक्तियों को अधिकारियों से लाभ होगा.

आज जन्मे शिशु का भविष्य

आज जन्म लिये बालक की शिक्षा के प्रति लगनशीलता रहेगी. स्वास्थ्य की दृष्टि से बालक के ग्रहयोग मददगार सिद्ध होंगे. मित्रों की संख्या अधिक रहेगी. खेलों के प्रति लगाव रहेगा. माता पिता को जीवन में सुखी रखेगा.

मेष- मामूली बात को तूल देने से संबंध बिगड़ सकते हैं. व्यवसायिक यात्रा लाभदायक रहेगी. जीवनसाथी का सहयोग मिलेगा. पद प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी.

वृषभ- अटका धन मिलने की उम्मीद है. दाम्पत्य सुख मिलेगा. धार्मिक यात्रा का योग है. समय के स्वरूप को देखकर कार्य करें. सहयोग बना रहेगा. प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी.

मिथुन- स्वास्थ्य को लेकर चिंतित रहेंगे कार्य स्थल पर प्रतिभा दिखाने का अवसर मिलेगा. नौकरी संबंधी कार्यों में सफलता मिलेगी. वातावरण अनुकूल रहेगा.

कर्क- मधुर व्यवहार से सबको अपना बना लेगें. मित्रों का सहयोग मिलेगा. राजकीय कार्य की रूपरेखा पर विचार होगा. मन:स्थिति संतुलित रहेगी.

सिंह- कार्यस्थल पर व्यवस्था बनाने के लिये कठोर निर्णय लेने पड़ेंगे. आशा से अधिक खर्च होगा. मानसिक अशांति बनी रहेगी. दिनचर्या अनियमित रहेगी.

कन्या- नौकरी में प्रतिष्ठा मिलने के आसार हैं. भूमि भवन वाहन खरीदने का मन बनेगा. कुछ जरूरी कामकाज होने से मन को खुशी होगी.

तुला- अनुभवी लोगों के साथ काम में निखार आयेगा. आर्थिक कार्यो में सतर्कता रखें. मित्रों का सहयोग बना रहेगा. पूज्य व्यक्ति की सेवा करना हितकर रहेगा.

वृश्चिक- लेखन और कला से जुडे लोगों को सम्मान मिलेगा. दिखावे के चक्कर में कर्ज का बोझ बढ़ सकता है. नौकरों एवं अधिनस्थ वर्ग सहयोग करेगा.

धनु- वाक चातुर्य से बिगडी बात बना लेगें, लापरवाही की तो अधिकारी नाराज हो सकते हैं. कोर्ट के कार्यों में सफलता के योग हैं. दिनचर्या नियमित रहेगी.

मकर- अपनों से संबंध सुधारने की कोशिश सफल होगी. संतान सुख मिलेगा. सोचे हुये कार्यों मं गति आयेगी. विवादों को टालना हितकर रहेगा.

कुम्भ- दबाव में समझौता करना पड़ सकता है. सुख सुविधा पर खर्च होगा. शुभ संदेश प्राप्त होगा. अतिथि आगमन की संभावना है. सुख सौहार्द्र प्राप्त होगा.

मीन- प्रापर्टी संबंधी विवादों का समाधान होगा. दिमाग की बजाय दिल से काम लें. पारिवारिक जीवन सुखमय बना रहेगा. मांगलिक कार्य पूर्ण होने का योग है.

उदयकालीन ग्रह चाल

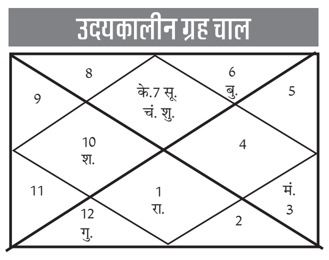

पंचांग

रा.मि. 07 संवत् 2082 भाद्रपद शुक्ल षष्ठी भृगुवासरे शाम 5/55, स्वाती नक्षत्रे दिन 10/50, ब्रह्म योगे दिन 2/31, तैतिल करणे सू.उ. 5/42 सू.अ. 6/18, चन्द्रचार तुला, पर्व- श्री सूर्य षष्ठी व्रत, शु.रा. 7, 9, 10, 1, 2, 5 अ.रा. 8, 11, 12, 3, 4, 6 शुभांक- 9, 2, 6.

व्यापार भविष्य

भाद्रपद शुक्ल षष्ठी को स्वाती नक्षत्र के प्रभाव से गुड, खांड, रूई, कपास, सूत, खल, बिनौला, गेहूं, जौ, चना, जूट, पाट, बारदाना में नरमीं का रूख रहेगा. वायदा विचार आज पिछले दिन के भाव पर व्यापार करना लाभप्रद रहेगा. भाग्यांक 2589 है.

SUDOKU 7138

7	8				2	6		3
			4					
1	3	5		8				
	2			1			7	8
6	7			9			2	
				6		5	9	2
					3			
2		8	5				6	1

■ प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक है. इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है. आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 333 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें. ■ पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते. ■ पहेली का केवल एक ही हल है.

नवभारत सू-दोकू 7137

4	3	2	9	5	6	1	7	8
6	8	5	7	1	4	9	2	3
9	1	7	3	8	2	4	5	6
3	4	8	6	2	7	5	1	9
5	6	1	8	4	9	2	3	7
2	7	9	5	3	1	6	8	4
1	9	3	4	7	5	8	6	2
8	2	4	1	6	3	7	9	5
7	5	6	2	9	8	3	4	1